ओमशान्ति। मीठे 2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप समझाते हैं। बच्चे समझते हैं उंच ते उंच भगवान कहा जाता है। आत्मा की बुधि का योग घर तरफ जाना चाहिए। परन्तु ऐसा एक भी मनुष्य दुनिया भर में नहीं है जिसकी यह बुधि में आता हो। सन्यासि लोग भी ब्रह्म को घर नहीं समझते। वह तो कहते हैं ब्रह्म में लीन हो जावेंगे। तो घर थोड़े ही हुआ। घर में ठहरना होता है। तुम बच्चों की बुद्धि वहां रहनी चाहिए। जैसे कोई पंगली पर चढ़ता है ना। तुम अब रूहानी पंगली पर चढ़े हुये हो। अन्दर में यह है उंच ते उंच बाप आकर हमको उंच ते उंच घर ले जाते हैं। अब हमको घर जाना है। उंच ते उंच बाप फिर उंच ते उंच पद भी प्राप्त कराते हैं। रावण के राज्य में सभी नीच हैं। वह उंच, यह नीच। उन्हों को उंच का पता नहीं है। उंच को भी नीच का पता नहीं है। अब तुम समझते हो उंच ते उंच भगवान बाप को ही कहा जाता है। बुधि उपर में चली जाती है। वह है ही परमधाम में रहने वाला। यह कोई भी नहीं समझते हम आत्मा भी उपर में रहने वाली हैं। यहां आते हैं सिर्फ पार्ट बजाने। यह कोई के ख्याल में नहीं रहता। अपने ही धंधे-धोरी आद में लगे रहते हैं। अब बाप समझाते हैं उंच ते उंच तब बनेंगे जब याद की यात्रा में तुम मस्त रहेंगे। याद से उंच पद पाना है। नालेज जो तुमको सिखाई जाती है वह भूलने का नहीं है। छोटे बच्चे भी कर्म कर लेंगे। बाकि योग की बात को बच्चे नहीं समझेंगे। बहुत बच्चे हैं जो याद की यात्रा को पूरी रीत समझते नहीं हैं। हम कितना उंच ते उंच जाते हैं, मूल वतन, सूक्ष्म वतन। और यह है स्थूल वतन। 5 तत्व यहां हैं। मूल वतन, सूक्ष्म वतन में यह नहीं होते। यह नालेज बाप ही देते हैं इसलिए इन को नालेज फुल, ज्ञान का सागर कहा जाता है। मनुष्य फिर समझते हैं बहुत शास्त्र आद पढ़ना ही ज्ञान है। शास्त्रों का कितना घमण्ड रहता है। कितना पैसा कमाते हैं। शास्त्र पढ़ने वालों को बहुत मान होता है। परन्तु अब तुम समझते हो उसमें उंचाई तो कुछ है नहीं। उंच ते उंच है ही भगवान। उन द्वारा हम उंच ते उंच स्वर्ग में राज्य करने वाले बनते हैं। स्वर्ग क्या है, नर्क क्या है, 84 का चक्र कैसे फिरता है सिवाये तुम्हारे इस सृष्टि भर में कोई नहीं जानते। कह देते हैं यह भी कल्पना है। ऐसे लिए फिर समझाना है हमारे कुल का न है। मुझ न होना चाहिए। समझा जाता है उनका पार्ट ही नहीं है तो कुछ भी समझ न सकेंगे। अब तुम बच्चों का सर बहुत उंच है। जब तुम उंच दुनिया में होंगे तो नीच दुनिया को नहीं जानेंगे। नीच दुनिया वाले फिर उंच दुनिया को नहीं जानते। उनको कहा जाता है स्वर्ग। विलायत वाले (क्रिश्चन लोग) भल स्वर्ग में जाते नहीं हैं फिर भी नाम लेते हैं हेविन पैराडाईज था। मुसलमान लोग भी बहिस्त कहते हैं। परन्तु यह उनको पता नहीं है वहां कैसे जन्म होता है। अभी तुमको कितनी समझ मिलती है। उंच ते उंच बाप कितनी नालेज देते हैं। यह ड्रामा कैसा वन्डरफुल बना हुआ है। जो ड्रामा के राज़ को नहीं जानते तो कल्पना कह देते। सन्यासि लोग भी कहते हैं सब कल्पना है। मनुष्य जो चाहे सो बना दे सकते हैं। बायसकोप आद बनाते हैं यह भी कल्पना है। ख्यालात से बनाते हैं ना। कोई काम की चीज़ तो नहीं है। तुम बच्चे जानते हो यह है ही पतित दुनिया। इसलिए चिल्लाते हैं हे पतित-पावन आकर हमको पावन बनाओ। बाप कहते हैं हर 5000 वर्ष बाद हिस्ट्री रिपीट होनी है। पुरानी दुनिया सो फिर नई बननी है। इसलिए मुझे भी आना पड़ता है। बाप आये तुम बच्चों को उंच बनाता हूं। पावन को उंच, पतित को नीच कहा जाता है। यही दुनिया नई पावन थी। अब पतित आसुरी है। यह बातें भी तुम्हारे में नम्बरवार हैं जिनकी बुधि में आती है। सदैव खुशी में नहीं रहते। कोई ने कुछ कहा, कोई नुकसान हुआ तो रंज हो जाते हैं। बाप कहते हैं अब इस नीच दुनिया का अन्त आना है। यह है पुरानी दुनिया। मनुष्य कितना नीच बन जाते हैं। परन्तु यह समझते थोड़े ही हैं कि हम नीच हैं। भक्त लोग हमेशा नीच, नमाते ही रहते हैं। नीच के आगे नीच नमाना थोड़े ही होता है। पोजिशन वाले के आगे नीच नमाना होता है। सतयुग में कब ऐसे नहीं कहते। भक्त लोग ही कहते हैं। विद्वान आद कब नहीं कहेंगे।

कहेंगे। बाप तो कब ऐसे नही कहते नीच नमाये चलो। नहीं। यह तो पढ़ाई है। गाडली युनिवर्सिटी में तुम पढ़ रहे हो। कितना नशा रहना चाहिए। ऐसे नहीं कि सिर्फ युनिवर्सिटी में नशा रहे। घर में उतर जाये। घर में भी नशा रहना चाहिए। यहां तो तुम जानते हो हमको शिव बाबा पढ़ाते हैं। यह तो कहते हैं मैं पीढ़ी ही ज्ञान का सागर हूं। यह भी ज्ञान नदी हैं। सागर से नदियां निकलती हैं ना। सागर तो एक है। ब्रह्मपुत्रा नदी सब से बड़ी हैं। बहुत बड़ा स्टीमर आते हैं। नदियां तो बाहर में भी बहुत हैं। पतित पावन गंगा सिर्फ यहां ही कहते हैं। बाहर में कोई नदी को ऐसे नहीं कहते। पतित पावन नदी हो तो फिर गुरु को दरकार ही नहीं। नदियों में, तालावों आद में कितना भटकते हैं। कहां2 तो तालाब ऐसे गंदे होते हैं बात मत पुछो। वह मिट्टी उठाये रगड़ते रहते हैं। अब बुधि में आया है यह सब दुर्गति के रास्ते हैं। वह लोग कितना प्रेम से जाते हैं। अब तुम समझते हो इस ज्ञान से हमारी आंखें ही खुल गई हैं। तुम्हारी ज्ञान की तीसरा नेत्र खुली हैं। आत्मा को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता हैं। इसलिए त्रिकालदर्शी कहते हैं। तीनों कालों का ज्ञान आत्मा में हैं। आत्मा तो बिन्दी हैं। उसमें नेत्र कैसे होंगा। यह सब समझाने की बातें हैं। ज्ञान के तीसरे नेत्र से तुम त्रिलोकी नाथ बनते हो। नास्तक से आस्तक बन जाते हो। आगे बाप को और रचना के आद, मध्य; अन्त को नहीं जानते थे। अभी बाप द्वारा रचना को जानने से तुमको वर्सा मिल रहा है। यह नालेज है ना। हिस्ट्री जागराफी है। हिसाब-किताब भी है। अच्छा तीखा बच्चा हो तो बैठ हिसाब करे, हम कितने जन्म लेते हैं। इस हिसाब से और धर्म वालों के कितने जन्म होंगे। परन्तु बाप कहते हैं इन बातों में जास्ती माथा मारने की दरकार नहीं। टाईम वेस्ट हो जाता हैं। यहां तो सब भूलना है। यह सुनाने की दरकार नहीं। तुम तो रचता बाप को पहचान देते हो। जिसको कोई नहीं जानते। शिव बाबा भारत में ही आते हैं। जरूर कुछ कर के जाते हैं तब तो जयन्ती मनाते हैं ना। गांधी अथवा कोई साधु आद हो कर गये हैं उन्हों के स्टेम्पस बनाते हैं। पेमलीप्लान का भी स्टेम्प बनाया हैं। अभी तुमको तो नशा है हम पाण्डव गवर्मेन्ट हैं। आलमाईटी बाबा के गवर्मेन्ट हैं। तुम्हारा कोर्ट आफ आर्मस भी है। और कोई इस कोर्ट आफ आर्मस को जानते नहीं। बाबा राय देते रहते हैं। अपना अखबार निकालो। उसमें कोर्ट आफ आर्मस भी दो। और समझाते रहो विनाश काले प्रीत बुधि हमारी हैं। बाप को हम बहुत याद करते हैं। बाबा को याद करते2 प्रेम में आंसु भी आ जाते हैं। बाबा आप हमको आधा कल्प लिए सभी दुःखों से दूर कर लेते हो। और कोई भी गुरु अथवा मित्र-सम्बधी आद किसको भी याद करने की दरकार नहीं हैं। एक बाप को ही याद करो। सवेरे अमृत वेले का टाईम बहुत अच्छा हैं। बाबा आप को तो बहुत कमाल हैं। आप हर 5000 वर्ष बाद आकर हमको जगाते हो। मनुष्य कुम्भकरण के आसुरी नींद में सोये हुये हैं। अर्थात अज्ञान नींद में है। भक्ति को अज्ञान नींद कहा जाता हैं। जब तक बाप का ज्ञान नहीं है तब तक भक्ति को ही मानते हैं। कितना हठयोग आद सिखलाते हैं। विलायत से भी खास आकर हठयोग सिखते हैं। तुम क्या करते हो और वह महर्षि आद बैठ क्या कराते हैं। कितना फर्क हैं। अब तुम समझते हो भारत का प्राचीन योग तो यह हैं। बाकि लोग भी इतने योग आद सिखलाते हैं वह सब है नानसेन्स। मनुष्य तो बिलकुल ही पत्थर बुधि हैं। पारस बुधि होते ही है नई दुनिया में। परन्तु एक भी मनुष्य मात्र अपन को पत्थर बुधि समझते नहीं है। जब पारस बुधि का ज्ञान हो तब समझें। बाप कहते है कितने मूर्ख बन गये हो। इसलिए भारत की यह हालत हुई है। अब तुम पुजारी से पूज्य बनते हो। तुम्हारी बुधि में ज्ञान हैं, खुशी रहती हैं। यहां आते हो समझते हो बाबा रिफ्रेश करते हैं। कोई तो रिफ्रेश हो बाहर निकलते और वह नशा खलास हो जाता। नम्बरवार तो हैं ना। बाप समझाते है यह हैं ही पतित दुनिया। बुलाते भी है पतित पावन आओ। परन्तु अपन को पतित समझते थोड़े ही हैं। साधु लोग गंगा में स्नान आद करने जाते हैं, उसको समझाते हैं पतित-पावनी हैं। इसलिए पाप धोने जाते हैं। और शरीर को थोड़े ही पाप लगता हैं। बाप तो आकर आत्मा को पावन

बनाते है।और कहते हैं मामेकं याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जावेंगे।x यह ज्ञान अभी तुमको मिला हैं। वह आपन को पतित थोड़े ही समझते हैं।आपनो पूजा कराते रहते है।जैसे देवताओं की होती हैं।तुम माताओं को तो नशा होना चाहिए यह तो दुश्मन ठहरे, जो हमारी हमजिन्स को विधवा बनाये देते हैं।और बच्चों को निष्फल कर देते हैं।अपने सुख के लिए कितने को दुःख देते हैं।परन्तु वह समझते थोड़े ही हैं।स्वर्ग में ऐसी बातें होती नहीं।यह है ही x रौरव नर्क।सभी क्रिश्चियन मिलल-मारते काटते रहते हैं। पराई स्त्रीयों को चुरा ले लेते हैं।बहुत गन्द हैं।भारत में तो और ही रौरव नर्क हैं।भारत एकदम स्वर्ग था। थोड़ा भी कुछ होता है तो भी कहेंगे ना रौरव नर्क हैं।जैसे बाबा कहते हैं तुम थोड़ा समय इस नर्क में हो।बाकि तुम तो हो संगम पर।परन्तु कोई विकार में गिरते है,फेल होते हैं तो xxx जैसे कि नर्क में जाये पड़ते हैं।5 फ्लोर से गिर पड़ते।फिर सोगुणा सजा खानी पड़ती हैं।तो बाप समझाते हैं भारत कितना उंच था।अब कितना नीच हालत में हैं।तुम विश्व के मालिक थे।अभी तो अजामिल जैसे पापी हो पड़ेx पड़ें हो।शास्त्रों में क्या2 बातें बैठ लिखी हैं।फिर पादरी लोग बैठ कहते हैं तुम्हारा शंकर पार्वती पर फिदा हुआ।फिर क्रिश्चियन पैदा हुये। भगवान-भगवती ऐसे काम करते xx थे? ऐसी2 बातें सुनाये वह x फिर अपने धर्म ले आते हैं।कितनी ग्लानी की बातें शास्त्रों में लिख दी हैं।बाप बैठ समझाते हैं यह लोग अपन को ईश्वर कहलाते xx हैं और मुझे कह देते है पत्थर ठीकर में हैं।और अपन को पूजवाते रहते हैं।यह भी ड्रामा में नुंध हैं।परन्तु समझाना तो पड़ता है ना।xxx क्या2 बातें सुनाते हैं।कच्छ-मच्छ अवतार, सुअर अवतार भी कह देते हैं।अब सुअर तो हैं सबसे गन्दा जनावर।क्योंकि वह किटा खाते हैं।उनको भी भगवान का अवतार कह देते हैं।अभी तुम कितना समझदार बनते हो।मनुष्य कितना बेसमझ हैं।तुमको यहां नशा चढ़ता है फिर बाहर निकले से नशा कम हो जाता है।खुशी उड़ जाती हैं।स्टुडेन्ट बड़ा इम्तहान पास करते हैं तो कब नशा कम होता है?पढ़ कर पास होते है फिर क्या बनते हैं।तो अब दुनिया का हाल देखो क्या हैं।तुमको उंच ते उंच बाप खुद आकर पढ़ाते हैं।x सो भी निराकार।तुम आत्माएं भी निराकार हो।यहां पार्ट बजाने xx आये हो।यह ड्रामा का राज़ बाप हो बैठ कर समझाते हैं।इस सृष्टि के चक्र को ड्रामा भी कहा जाता हैं।उस नाटक में कोई विचारे पड़े तो निकल जाते। यह है बेहद का नाटक।यथार्थ रीति तुम बच्चों की x बुधि में हैं।तुम जानते हो हम यहां पार्ट बजानेx आते हैं।हम बेहद के एक्टरस हैं।यही शरीर xxx लेकर पार्ट बजाते हैं।बाबा आया हुआ हैं। यह सब बुधि में रहना चाहिए। बेहद का ड्रामा कितना बुधि में रहना चाहिए।बेहद विश्व की बादशाही मिलती है।तो इसकेलिए पुरुषार्थ भी ऐसा अच्छा करना चाहिए ना। गृहस्थ व्यवहार में भोभल रहो,परन्तु पवित्र बनो।विलायत में ऐसे बहुत हैं जब बुढे होते हैं तोकम्पेनियनशीप के लिए शादी करते हैं। सम्भालने के लिए । फिर विल कर देते हैं । कुछ उनको, कुछ चैरिटी में।विकार की बात नहीं रहती।आशुक-माशुक भी विकार लिए फिदा नहीं होते हैं।जिस्म का सिर्फ प्यार।तुम हो रूहानी आशुक।एक माशुक को याद करते हो। सभी आशुकों का एक माशुक हैं। सभी एक ही को याद करते हैं।वह कितना शोभनिक हैं।आत्मा गोरी हैं ना। वह है एवर गोरा।तुम जो सांवरा बन गये हो ,तुमको सांवरा से गोरा बनाते हैं।तुम xxxx जानते हो बाप हमको गोरा बनाते हैं।यहां बहुत हैं पता नहीं किस किस ख्यालात में बैठे रहते हैं।स्कूल में भी ऐसे होता हैं। बैठे2 बुधिकहां बाल्यकोम तरफ, दोस्तों आद तरफ चली जाती हैं।सतयुग संग xमें भी ऐसा होता हैं। यहां भी ऐसे हैं।बुधि में नहीं बैठता तो नशा x नहीं चढ़ता।धारणा नहीं होती हैं जो फिर औरों को भी करावें।बहुत बच्चियां आती हैं जिनकी दिल होती हैं कि xxx सर्विस पर लग जावें।परन्तु बच्चे हैं तो बाबा कहते हैं बच्चे को सम्भालने कोइ माइ को रख दो।यह तो बहुतों का कल्याण करेंगी।होशियार हो तो क्यों न रूहानी सर्विस में लग जायें। बच्चे को सम्भालने कोइ को रख दो।इन माताओं की तो अब बारी है ना।फिर देखेंगे हमारी स्त्री ने तो सन्यासियों को भी जीत लिया है।लौकिक,पारलौकिक नाम बाला कर दिखायेंगी। अच्छा गुडमार्निंग।